अमृत विचार
www.amritvichar.com

मनुष्य बनाम नदियां: बाढ़ की वजह अतिक्रमण और गाद

संजय ओझा
वाइस प्रेसीडेंट, कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस, बजाज ग्रुप

आकस्मिक बाढ़ और भूस्खलन पर्यावरण पर मानवीय कार्यों के परिणामों की गंभीर याद दिलाते हैं। जीवन की हानि और घरों और बुनियादी ढांचे का विनाश नदी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और सतत विकास की आवश्यकता को प्राथमिकता देने में हमारी विफलता का गंभीर परिणाम है। अब, पहले से कहीं अधिक, मानवता के लिए इस संकट में अपनी जिम्मेदारी को पहचानना अनिवार्य है।

घटनाओं के एक दुखद क्रम में, उत्तर भारत में भारी बारिश के कारण अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन ने 40 से अधिक लोगों की जान ले ली (मीडिया रिपोर्टों के अनुसार) और राष्ट्रीय राजधानी का बड़ा हिस्सा बाढ़ग्रस्त हो गया।

यह हालिया आपदा नदी तलों और जलग्रहण क्षेत्रों पर अतिक्रमण के मानव निर्मित संकट पर जोर देती है। इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर अतिक्रमण करने वाली आवासीय इमारतों और अन्य निर्माणों ने प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को बढ़ा दिया है, जिससे जीवन और संपत्ति की हानि हुई है। यह गंभीर स्थिति मनुष्यों के लिए इस आपदा में अपनी भूमिका को स्वीकार करने और तत्काल सुधारात्मक उपाय करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

विभिन्न क्षेत्रों में तबाही मचाने वाली विनाशकारी बाढ़ को नदी पारिस्थितिकी तंत्र के अतिक्रमण और परिवर्तन के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। तेजी से शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने नदियों और उनके बाढ़ के मैदानों के प्राकृतिक प्रवाह पर पर्याप्त विचार किए बिना इमारतों, बुनियादी ढांचे और औद्योगिक सुविधाओं के निर्माण को प्रेरित किया है। परिणामस्वरूप, भारी वर्षा को झेलने और टिकाऊ जलधारा बनाए रखने की नदियों की क्षमता काफी कम हो गई है।

आकस्मिक बाढ़ और भूस्खलन पर्यावरण पर मानवीय कार्यों के परिणामों की गंभीर याद दिलाते हैं। जीवन की हानि और घरों और बुनियादी ढांचे का विनाश नदी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और सतत विकास की आवश्यकता को प्राथमिकता देने में हमारी विफलता का गंभीर परिणाम है।

अब, पहले से कहीं अधिक, मानवता के लिए इस संकट में अपनी जिम्मेदारी को पहचानना अनिवार्य है। सरकारों, शहरी योजनाकारों और नागरिकों को समान रूप से सुधारात्मक कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिए। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बहाल करने, अतिक्रमित नदी तलों को पुनः प्राप्त करने और भविष्य में बाढ़ की घटनाओं के प्रभाव को कम करने के लिए बफर जोन स्थापित

विभिन्न क्षेत्रों में तबाही मचाने वाली विनाशकारी बाढ़ को नदी पारिस्थितिकी तंत्र के अतिक्रमण और परिवर्तन के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। तेजी से शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने नदियों और उनके बाढ़ के मैदानों के प्राकृतिक प्रवाह पर पर्याप्त विचार किए बिना इमारतों, बुनियादी ढांचे और औद्योगिक सुविधाओं के निर्माण को प्रेरित किया है। परिणामस्वरूप, भारी वर्षा को झेलने और टिकाऊ जलधारा बनाए रखने की नदियों की क्षमता काफी कम हो गई है।

करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिएं। प्रयासों को टिकाऊ शहरी विकास प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो नदी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को प्राथमिकता देते हैं। इसमें जल निकायों के पास निर्माण पर सख्त नियम लागू करना, बाढ़ प्रतिरोधी सामग्रियों के उपयोग को बढ़ावा देना और भारी वर्षा के दौरान अतिरिक्त पानी के प्रबंधन के लिए प्रभावी जल निकासी प्रणाली स्थापित करना शामिल है। इस परिमाण की आगे की आपदाओं को रोकने के लिए विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

नदी प्रणालियों पर अतिक्रमण के परिणामों और इन प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा के महत्व को उजागर करने के लिए शिक्षा और जागरूकता अभियान भी शुरू किए जाने चाहिए। जिम्मेदारी और सामूहिक कार्रवाई की भावना पैदा करने में स्थानीय समुदायों, पर्यावरण संगठनों और सरकारी निकायों की भागीदारी सर्वोपरि है।

हाल की आकस्मिक बाढ़ और भूस्खलन भी एक चेतावनी के रूप में काम करते हैं, जो मानवता को प्राकृतिक दुनिया पर उसके कार्यों के विनाशकारी परिणामों की याद दिलाते हैं। अब समय आ गया है कि समाज अपनी गलती स्वीकार करे और स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाए। हालांकि पुनर्प्राप्ति की राह लंबी और कठिन हो सकती है, मनुष्य और नदी के स्थायी सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए देर आए दुरुस्त आए। केवल इस मानव निर्मित संकट को सीधे संबोधित करके ही हम जीवन, संपत्ति और हमें बनाए रखने वाले नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने की उम्मीद कर सकते हैं।

मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूं क्योंकि बजाज फाउंडेशन ने नदी पुनर्जीवन (गाद निकालना और जलग्रहण क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त बनाना) प्रयासों के सकारात्मक परिणामों का प्रदर्शन किया है। मानसून के मौसम के बाद नदी तल में लगभग पानी नहीं था। 2010 में, जब हमने महाराष्ट्र के वर्धा जिले में यशोदा नदी बेसिन के पुनरुद्धार पर अपना काम शुरू किया, तो क्षेत्र में मानसून के मौसम के दौरान गंभीर बाढ़ आई, जिससे सैकड़ों परिवार प्रभावित हुए। हालांकि, नदी से गाद निकालने और उसका जीर्णोद्धार करने सहित हमारे प्रयासों के माध्यम से, बाढ़ अतीत की बात बन गई है। आज नदी तल में साल भर पानी रहता है।

फाउंडेशन की पहल की सफलता भविष्य की पीढ़ियों को बाढ़ की तबाही से बचाने में अतिक्रमण मुक्त नदी घाटियों और जलग्रहण क्षेत्रों के महत्व पर प्रकाश डालती है। यह दृष्टिकोण दूसरों के अनुसरण के लिए एक मॉडल के रूप में काम कर सकता है, जो नदियों के प्राकृतिक प्रवाह और संतुलन को बहाल करने की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित करता है।

विभिन्न क्षेत्रों में समान उपाय लागू करके, हम अतिक्रमण से जुड़े जोखिमों को कम कर सकते हैं और समुदायों की दीर्घकालिक लचीलापन सुनिश्चित कर सकते हैं। नदी तलों और जलग्रहण क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना और संरक्षित करना एक प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि इसका बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की सुरक्षा और भलाई पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

सरकारों, निगमों और व्यक्तियों के लिए हाथ मिलाना और हमारी नदी पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने और बनाए रखने के उद्देश्य से पहल में निवेश करना महत्वपूर्ण है। टिकाऊ प्रथाओं को शामिल करके, सख्त नियमों का पालन करके और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देकर, हम मनुष्य और नदी के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित कर सकते हैं, भविष्य की त्रासदियों को रोक सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। मैं कह सकता हूं कि आज सक्रिय होने से महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव आ सकता है। आइए हम अतिक्रमण मुक्त नदी घाटियों और जलग्रहण क्षेत्रों के निर्माण की दिशा में नदी पुनर्जीवन की सफलता की कहानियों से प्रेरणा लें, जिससे जलवायु संबंधी चुनौतियों का सामना करने में हमारे समुदायों की सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित हो सके। अब कार्रवाई करने का समय आ गया है, और दांव इतना बड़ा कभी नहीं रहा।